2:1-10

उद्धार, विश्वास का परिणाम

(भाग 2)

जैसे ही अध्याय 2 आरम्भ होता है, पवित्र बनने का विषय जारी रहता है। भाईचारे के प्रेम और सच्चाई के प्रति आज्ञाकारिता के बिना कोई पवित्रता नहीं हो सकती। इसके अतिरिक्त पतरस चाहता था कि उसके पाठक समझें कि पवित्रता एक मानसिकता है। यह सोच विचार और व्यवहार का एक तरीका है जो विश्वासी के विवेक को व्याप्त करता है। पवित्रता एक मानसिक स्थिति है परन्तु यह इससे बढ़कर है। यह व्यवहार का एक तरीका भी है।

"नए जन्मे बच्चों की तरह" (2:1-3)

[1]इसलिये सब प्रकार का बैर भाव और छल और कपट और डाह और निन्दा को दूर करके, [2]नए जन्मे हुए बच्चों के समान निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ, [3]क्योंकि तुम ने प्रभु की कृपा का स्वाद चख लिया है।

आयत 1. क्योंकि मसीहियों ने सच्चाई को मानने के द्वारा अपने मनों को पवित्र किया था, क्योंकि अविनाशी बीज से उनका जन्म हुआ था, उन्हें परमेश्वर के पवित्र लोग बनना आवश्यक था। "वह बनना जो परमेश्वर ने आपको बनाया है" यह वह विषय है जो नये नियम में अन्य किसी स्थान पर भी मिलता है (उदाहरण के लिए, रोमियों 12:1, 2)। **बैर भाव और छल और कपट और डाह और निन्दा को** दूर करना विश्वासी की पवित्रता के लिए जरूरी है। जीवन के आचरण से इस तरह की बातों को दूर करना यह हल्के रूप में लेने वाला विषय नहीं था। पतरस के पाठकों को अपने पुराने जीवन का त्याग करना था जो उनके पुरखाओं से चला आ रहा था (1:18), जीवन जिसे उनके सम कालीनों के द्वारा गले लगाते रहना था। पतरस ने पुराने जीवन के आचरण को त्यागने की बिनती की जैसे कोई व्यक्ति अपने पुराने वस्त्र उतार देता है। पौलुस ने उसी तरह के अलंकार का प्रयोग किया था, यहाँ तक कि उसी क्रिया का प्रयोग किया "उतार दो" (ἀποτίθημι, *अपोटिथेमि),* जब उसने नए मसीहियों को न केवल मसीह में विश्वास करने के लिए ही बिनती की परन्तु उसका अनुकरण करनेवाले जीवन को

जीने के लिए भी कहा (इफिसियों 4:22-24; कुलुस्सियों 3:8-10)।

रोमियों 6:3, 4 से यह कोई भिन्न विषय नहीं है। वहाँ पौलुस ने मृत्यु और मृतकों में से पुनरुत्थान का प्रयोग किया विश्वासियों को पवित्र जीवन जीने की बिनती की। जैसा पौलुस ने रोमियों 6 में किया, पतरस ने अपने पाठकों को उनके बपतिस्मा की महत्वता का स्मरण करवाया। जबकि पौलुस ने बपतिस्मा को स्पष्ट रूप से उल्लेख किया, पतरस इससे अधिक गूढ़ था। पतरस के लिए "नया जन्म" (1:3, 23), और "नए जन्मे बच्चे" (2:2) बपतिस्मा की भाषा थी, पौलुस के लिए निश्चित रूप से "पाप के पुराने मनुष्य से मरना" था। क्योंकि उसके पाठक नया जन्म पाए हुए थे, पतरस ने उन्हें अपने पुराने मनुष्य को त्यागने के लिए कहा। संक्षेप में वह कह रहा था, "क्योंकि तुमने पुराने मनुष्य को त्याग दिया है, अब पुराने मनुष्य में नहीं रहना है। वही बनो जो परमेश्वर ने तुम्हें बनाया है।"

सामान्य रूप से नया नियम व्यवहार को शब्दों की सूची के द्वारा सकारात्मक और नकारात्मक रूप से संक्षेप में प्रस्तुत करता है। पतरस ने इस पत्री में अन्य स्थान पर भी युक्ति का समर्थन किया (3:8, 9; 4:3, 15; 5:2, 3)। पौलुस ने भी कई बार इस तरह की सूची को प्रस्तुत किया (रोमियों 1:29-32; 2 कुरिन्थियों 12:20; गलातियों 5:19-23)। यह असम्भव है कि पतरस ने सूची में से किसी बात को चुना जो पाठकों को स्पष्ट रूप से त्यागनी थी क्योंकि वह जानता था इसी ने उनका चरित्र चित्रण किया है। ये शब्द मानवीय लक्षणों को सार्वभौमिक जीवन के रूप में वर्णन करते हैं। उन्होंने सम्भवतः पतरस के पाठकों का न कम न ज्यादा से बढ़कर वे लोगों के समूह का वर्णन करते हैं। पतरस ने उनकी सूची बनाई क्योंकि वे विशेष गुण हैं जो विश्वासियों की देह में कलह भड़काते हैं। उस भाव में, सूची 1:22 तक पहुँचती है। मसीहियों को अपने हृदय से निष्ठापूर्वक एक दूसरे से प्रेम करना था। क्योंकि वे एक दूसरे से प्रेम करते थे इसलिए उनको इन बातों को अपने से दूर करना था। प्रत्येक शब्द जो पतरस ने प्रयोग किए उनको पर्याप्त रूप से समझाने के लिए विस्तृत व्याख्या की जरूरत थी। उनमें से प्रत्येक का संक्षिप्त वर्णन दिया गया है।

"बैर भाव" (κακία, *काकिया)* दुष्टता के लिए यह एक आम शब्द है जिसे अक्सर सदाचार के विरुद्ध रखा जाता है। यह मन में नैतिक भ्रष्टता को लाता है। पतरस ने मानसिकता के अपरिपक्व, विकृत नैतिक स्वभाव के शब्द को प्रयोग किया जो कि बैर भाव या दूसरों के प्रति बुरी इच्छा के साथ देखा गया है। याकूब ने उस शब्द को विशेषण शब्द "बढ़ती" या "की पूर्ण सीमा" के साथ प्रयोग किया (याकूब 1:21)। उसी क्रिया का प्रयोग किया जो पतरस ने किया था, याकूब ने लिखा कि सारी दुष्टता को एक वस्त्र के समान उतार देना चाहिए। "छल" (δόλος, *डोलोस)* यह सब प्रकार की चतुराई धोखे को शामिल करता है। यह विश्वासघात के अर्थ को बताता है। यीशु के सम्बन्ध में, जिसका मसीहियों को अनुकरण करना चाहिए, पतरस ने कहा, "उसके मुँह में कोई छल की बात" नहीं थी (2:21, 22)।

"कपट" (ὑπόκρισις, *हुपोक्रीसिस)* के शब्द का प्रयोग चिरकाल यूनानी

समाज में मंच पर अभिनेता के लिए किया जाता था। शाब्दिक रूप में इसका अर्थ अभिनय करना है। यीशु ने धार्मिक शिक्षकों को जो उसका विरोध करते थे उन्हें "कपटी" कहा। वे जो अपने मुँह से कहते थे और वे जो करते थे असंगत था (मत्ती 23:13-33)। कपट गूढ़ अभिप्राय (1 तीमुथियुस 4:2) से किए गए कार्य और मन के स्वभाव को जो वह है नहीं वह होने का ढोंग (गलातियों 2:13) करता दोनों बातों को नामित करता है। "डाह" (φθόνος, *फतोनोस)* अर्थ में वैसा ही है परन्तु ईर्ष्या के समान नहीं है। यदि ईर्ष्या दूसरों के प्रति कुभावना है क्योंकि उन बातों या प्रतिभाओं की इच्छा करता है जो दूसरों के पास हैं, डाह इस तथ्य के लिए कुभावना है कि दूसरे व्यक्ति के पास आशीषें, प्रतिभाएँ, ख्याति या प्रसिद्धि है। "निन्दा" (καταλαλιά, *काटालालिआ)* मौखिक अपशब्द है, दूसरों की बदनामी (झूठी या सच्ची) करना।

इन सभी शब्दों के सामान्य तथ्य की "भाईचारे के प्रेम के साथ" विसंगति है जिसके लिए प्रेरित ने 1:22 में बिनती की। परन्तु वहाँ पर इस तरह की अन्य बातें थीं। क्योंकि जिन मसीहियों को पतरस ने सम्बोधित किया वे अन्याय से दुख उठा रहे थे, अपने सतानेवालों को दया से प्रत्युत्तर देना उनके लिए एक परीक्षा थी, बैर भाव, छल, डाह और घृणा के लिए ठिकाना था। कुछ स्तर तक इन भावनाओं को वे पनाह दे रहे थे वे पहले से हारे हुए थे। यह ऐसे पाप हैं जो पापी का नाश करते हैं।

इसके साथ ही साथ, बाहरी अपमान का दबाव कभी-कभी आंतरिक अपमान बन जाता है और एक दूसरे के साथ बुरा व्यवहार करते हैं। यह कल्पना से परे है कि अपनी कुछ निराशाओं को मसीहियों ने अपने भाईयों और बहनों की ओर धकेल दिया था। बदनामी, विश्वासघात और निष्ठुरता ने भाईचारे के प्रेम को तुच्छ कर दिया था जिसकी आज्ञा उनको पतरस ने दी थी। चाहे गैर मसीही जगत या एक दूसरे के साथ सम्बन्धों में विश्वासियों को जीवन के उस आचरण को त्यागना था जिसने सांसारिकता को चित्रित किया था। उनको पवित्र जीवन व्यतीत करना था (1:15, 16)। पवित्र जीवन की मांग थी कि उन्हें गैर मसीहियों और विश्वासियों में अपने सम्बन्धों में पवित्रता का जीवन जीना था। पतरस के द्वारा सूचीबद्ध किए गए किसी भी लक्षण के साथ पवित्र जीवन व्यतीत करना असंगत था।

आयत 2. पतरस वापिस जन्म समरूपता की ओर आता है जो उसने 1:23 में आरम्भ किया था। इतना तो स्पष्ट है। फिर भी, पहला पतरस के कुछ विद्यार्थी विश्वास करते हैं कि शब्दावली "दूर करके" (2:1) और नए जन्मे बच्चों के समान, पतरस के द्वारा सम्बोधित किए गए एशियाई कलीसियाओं में उस समय की प्रथा का वर्णन करता है, परन्तु दूसरी और तीसरी शताब्दी की कलीसिया स्रोतों से बेहतर तरीके से जाना गया। नये नियम काल के बाद, हम जानते हैं कि बपतिस्मा के लिए व्यक्ति, कम से कम कुछ स्थानों पर बिना कपड़ों के बपतिस्मा दिया जाता था। बपतिस्मा के बाद उन्हें नए और स्वच्छ वस्त्र दिए जाते थे। जे. एन. डी. केल्ली ने उसी प्रथा को बनाकर रखा "प्रभावशाली समारोह बनाया।"

पुराने वस्त्र उतारना और नए पहनना यह उसके पुराने निकम्मे जीवन को त्यागने और पवित्रता के नए जीवन को स्वीकार करने के चिन्ह थे।[1] जबकि केल्ली के तर्कों को सरलता से रद्द नहीं किया जा सकता, यह इस तरह सम्भव है कि बपतिस्मा से पहले वस्त्र उतारने की प्रथा दूसरी और तीसरी शताब्दी में विकसित हुई इस भाग के मौखिक व्याख्यान से और उससे समरूपता से कि यह भाग उस प्रथा को प्रकट करता है।

चाहे वह कई वर्षों से मसीही रहे हों या कुछ दिनों ही से, उनको वचन के **निर्मल दूध की लालसा करनी थी**। क्रिया ἐπιποθέω (*epipotheō*) इपिपोतिओ, "लालसा करो" अनुवाद किया गया है यह दृढ़ है। इसका अर्थ है एक प्रकार की ऊर्जा को पाने की लालसा करना जैसे एक भूखा शिशु अपनी माँ से दूध पीने की लालसा करता है। एक मसीही को जरूरत है कि वह बढ़े। जैसे एक शरीर को बढ़ने के लिए भोजन खिलाया जाना है। न बढ़ना मसीही के लिए कोई विकल्प नहीं है। या तो मसीही बढ़ेगा या मरेगा। अर्थ यह है कि पालन पोषण के बिना वचन के द्वारा जो इच्छाएँ उनमें उत्पन्न हुई थीं मर जाएँगी। सुसमाचार के द्वारा पोषण पाकर वे बढ़ेंगे। उसी तरह की बात के साथ, पतरस ने अपनी दूसरी पत्री का समापन किया : "पर हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ।" (2 पतरस 3:18)।

यह "निर्मल दूध" ही था जिसकी मसीहियों ने लालसा करनी थी। अनुवादित शब्द "निर्मल" पिछले पद में अनुवादित शब्द "धोखा" का विपरीत है। प्रेरित ने ऐसे शब्द-भाव का प्रयोग किया है जिसे अपनी भाषा मे लेना कठिन है। 2:1 में पतरस ने अपने पाठकों को सब प्रकार के "धोखा" या "छल" (δόλος, *डोलोस)* को दूर करने के लिए कहा। 2:2 में, उनका निष्कपट दूध की लालसा करनी थी (ἄδολος, *एडोलोस)*। वचन का दूध जो उनका पोषण करेगा वह सब प्रकार के "धोखे" से दूर था, अर्थात वह "शुद्ध" दूध था। सुसमाचार जो उन्हें प्रचार किया गया था (1:25) वह पतरस के पाठकों के लिए शुद्ध था, धोखे, कपट से दूर। यह निष्कपट था क्योंकि जैसा प्रेरितों, नबियों और अन्य शिक्षकों ने इसे प्रस्तुत किया था न अधिक या कम था। यूनानी-रोमी नगरों के बाजारों में अक्सर ऐसे शिक्षक/दार्शनिक होते थे जो अपने कपट से जाने जाते थे। पतरस चाहता था कि इस तरह के शिक्षकों में और वे जिन्होंने मसीह का सुसमाचार प्रचार किया था कोई भ्रांति नहीं होना चाहिए।

NASB ऐसे अनुवाद करता है "वचन का निर्मल दूध" NRSV और NIV ने ऐसे किया है "निर्मल आत्मिक-दूध।" NASB आधुनिक अनुवाद में व्यवहारिक रूप से अकेला ही चलता है जब यह उस वाक्य को उसी रूप में अनुवाद करता है जैसे KJV करता है। शब्द अनुवाद किया गया "वचन का" (NASB) या "आत्मिक" (NRSV) λογικός *(लोगीकोस)* विशेषण है - दृढ़ता पूर्वक कहता है कि बात पर पूरी तरह से विचार किया गया है; इसलिए यह तर्कसंगत या विचारशील है। नये नियम में मात्र एक ही अन्य स्थान पर पाया गया है, रोमियों 12:1 में, यह बताता है पौलुस चाहता था रोमी मसीहियों को परमेश्वर को

बलिदान करके चढ़ाना है। उन्हें "विचारशील सेवा" करनी थी अर्थात उनको अपने कार्य अर्पण करने थे या सम्भवतः उनकी सेवा आत्मिक रूप से उत्प्रेरित थी। क्योंकि तर्कसंगत और विचारशीलता अभौतिक धारणाएँ हैं, लोगीकोस, विस्तार के द्वारा, ऐसा लक्ष्य भी कह सकते हैं कि यह अशाब्दिक होते हुए आत्मिक भाव में है।[2] अनुवादक के लिए प्रश्न है 1 पतरस 2:2 में वचन का संदर्भ तर्कसंगत, तार्किक और विचारशीलता पर बल दिया गया है या आत्मिक और अशाब्दिक अधिक दिया गया है। क्या पहले वाली NASB अनुवाद श्रेष्ठतर है; क्या बाद वाला NRSV और NIV का अनुवाद श्रेष्ठतर है।

उचित कारण से, NASB ने समझ से बाहर वाक्यों को जैसे "शुद्ध, तर्कसंगत दूध" को छोड़ दिया है। इसके स्थान पर अनुवादकों ने "वचन का शुद्ध दूध" के वाक्य को तर्कसंगत मानसिकता के भाव में लाने का प्रयास किया है। पतरस ने λόγος *(लोगोस)* और ῥῆμα *(रहेमा)* का इसके नजदीकी संदर्भ में प्रयोग किया, दोनों का अनुवाद "वचन" ही किया गया है, तर्क रखता है कि पद में लोगिकोस कारण और प्रकाशन का भाव दिया है। आगे जब पतरस ने अशाब्दिक को बोलना चाहा तो उसने अन्य शब्द πνευματικός *(युमाटीकोस)* का प्रयोग किया। यही शब्द 2:5 में प्रयोग किया गया जब प्रेरित ने "आत्मिक बलिदान" का वर्णन किया। आखिरकार, जबकि याकूब और पतरस के बीच सम्बन्ध सीधे साहित्यिक निर्भरता पर नहीं हैं, यह दोनों पत्र एक ही विचार जगत से आते हैं। जिस तरह से याकूब ने इस शब्द का प्रयोग किया यह पतरस के इस प्रयोग को समझने में सहायता कर सकता है। याकूब ने अपनी चेतावनी का बुरे व्यवहार को उतारने का अनुसरण यह कहते हुए किया, "बोए गए वचन को ग्रहण करो" (याकूब 1:21)। यह विचार NASB के अनुवाद के तराजू के पलड़े को भारी करते हैं।

पतरस ने हो सकता है लोगीकोस शब्द को प्रयोग करने के द्वारा दोनों की सूक्ष्मता को व्यक्त करने का इरादा किया हो। जिस दूध की उन्हें लालसा करनी थी वह आत्मिक था, अर्थात यह अभौतिक था परन्तु यह तर्कसंगत भी था। पतरस ने मसीहियों को अपनी आशा तर्क को देने की महत्वता पर जोर दिया (3:15)। यह संदेश जो उसके पाठकों ने सुना उनकी भावनाओं से बढ़कर आकर्षित किया। इसको इब्रानी पवित्रशास्त्र और मसीही नबियों और प्रचारकों के द्वारा मौखिक साक्षी का समर्थन था (1:12, 25)। जब मसीही लालसा करते हैं और उन्हें दूध दिया जाता है जो कि परमेश्वर का प्रकाशन है, तो पतरस की साक्षी थी कि **वह उद्धार पाने के सम्बन्ध में बढ़ता जाए**।

प्रेरित ने इस बात को स्पष्ट किया कि उद्धार स्थिर आचरण नहीं है। कोई व्यक्ति को ऐसे नहीं पाता है जैसे कोई बाजार से एक जोड़ा नई जूतों को खरीद ले और तब उनके साथ कार्य करे। भले ही वे मेमने के रक्त से बचाए गए थे, पतरस के पाठकों को अभी भी "उद्धार पाने के लिए बढ़ने" की जरूरत थी। उन्हें मसीह के विषय और अपने विश्वास को रखने और उसमें पूर्ण आशा को अधिक जानने की जरूरत थी। उनको 2:1 में दी गई सूची की बातों को छोड़ने के द्वारा प्रभु का अनुकरण करने में और अधिक बढ़ने की जरूरत थी। इब्रानियों के लेखक के शब्दों

में "मसीह की शिक्षा की आरम्भ की बातों को छोड़कर, हम सिद्धता की ओर बढ़ते जाएँ" (इब्रानियों 6:1)। मसीही नबियों और शिक्षकों ने उन पर उद्धार को घोषित किया था (1:12, 25), परन्तु पतरस के पाठकों को अभी भी बढ़ने की जरूरत थी। जैसे कि नए जन्मे बच्चों को दूध की जरूरत होती है। जो संदेश उन्होंने प्राप्त किया था आत्मिक, अशाब्दिक दूध था, परन्तु यह एक संदेश भी था जो उनके तर्क को अच्छा लगा क्योंकि यह तर्क को अच्छा लगा, इसलिए इसने आत्मिक उन्नति के लिए पोषण प्रदान किया।

आयत 3. एक प्रकार के शर्त सहित वाक्य को पतरस ने धारणाएँ प्रयोग कीं कि "इसलिए" वाक्य (वाक्यांश) का भाग सत्य है। पतरस ने यह माना कि उसके पाठक अपने व्यक्तिगत अनुभव से कह सकेंगे कि **उन्होंने प्रभु की कृपा का स्वाद चख लिया है**। NRSV ने शब्दों के भाव को "यदि सच्च में ही तुमने चख लिया है प्रभु भला है" अर्थ के साथ लिया है। इस वाक्यांश के यह अनुवाद करने के लक्ष्य से न चूक जाए "क्योंकि तुम ने प्रभु की कृपा का स्वाद चख लिया है।" (उद्धार का पोषण आलंकारिक दूध से हुआ था फिर भी वह तार्किक नहीं था, वह सबकुछ नहीं था। उनका उद्धार और अधिक निश्चित बन गया और उनका विश्वास और अधिक आत्म-तृप्ति बन गया जैसे-जैसे उन्होंने प्रकट किया (1) उनका नया जन्म होने के बाद, और (2) उनके अनुभव से कि प्रभु दयालु था। 1 पतरस 2:2 की भावुकता को भजन 34:8 आदेशात्मक के रूप में प्रदान करता है: "परखकर देखो कि यहोवा कैसा भला है! क्या ही धन्य है वह पुरुष जो उसकी शरण लेता है।" फिर से पतरस ने 3:10-12 में भजन 34 का सहारा लिया।

कई उपाय हैं जिससे मसीही परमेश्वर का अनुभव कर सकते हैं। विश्वासी परमेश्वर की सामर्थ्य या उसकी दया या उसके क्रोध को चख सकते हैं। भजनकार ने परमेश्वर के वचन की मधुरता का अनुभव किया: "तेरे वचन मुझ को कैसे मीठे लगते हैं, वे मेरे मुंह में मधु से भी मीठे हैं!" (भजन 119:103)। अय्यूब ने दुष्टता को चखा : "क्या मेरे वचनों में कुछ कुटिलता है? क्या मैं दुष्टता नहीं पहचान सकता?" (अय्यूब 6:30)। यह तो महत्वपूर्ण कि जब पतरस ने शब्द चाहा जो उसके पाठकों से सामान्य रूप से परमेश्वर के साथ उनके अनुभवों के विषय बात करे तो यह था "प्रभु की दया" जो उसके दिमाग में आई। इसके बाद में आने वाले पद में, पतरस ने इसे स्पष्ट किया कि "प्रभु" यीशु नासरी था। क्योंकि वे यीशु को जानते थे, प्रेरित के पाठकों ने परमेश्वर की दया को चखा था।

पतरस के पाठकों के द्वारा कष्ट सहने के संदर्भ में, हो सकता है किसी ने प्रेरित से परमेश्वर के अनुशासन या परमेश्वर के बदले के लिए बिनती की हो। दया की बिनती के स्थान पर। शब्द दया को χρηστός *(क्रिस्टोस)* से अनुवाद किया गया है, ऐसा शब्द जो Χριστός *(क्रिस्टोस)* अक्षर और ध्वनि दोनों के हिसाब से समरूप है, शब्द "क्राईस्ट।" मालिक कभी - कभी अपने गुलामों को नाम दिया करते थे Χρηστός *(क्रिस्टोस)*, अर्थ "दयालुता।" आरम्भ के कुछ रोमी लेखक जब वे मसीहियत से जागरूक हुए वे शब्दों से परेशान हो गए। उन्होंने सोचा मसीही लोग गुलाम के नाम से देवता की आराधना करते हैं। किसी का यह

मानना है कि यीशु ने जानबूझकर अपना नाम "दयालुता" रखा था। सार्वभौमिक अनुभव जिसकी पतरस ने अपने पाठकों से आशा की थी बताता है कि प्रभु दयालु था।[3]

मसीह, जीवता पत्थर; मसीही, एक आत्मिक घर (2:4-8)

[4]उसके पास आकर, जिसे मनुष्यों ने तो निकम्मा ठहराया परन्तु परमेश्वर के निकट चुना हुआ और बहुमूल्य जीवता पत्थर है, [5]तुम भी आप जीवते पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हैं। [6]इस कारण पवित्र शास्त्र में भी आया है: देखो, मैं सिय्योन में कोने के सिरे का चुना हुआ और बहुमूल्य पत्थर धरता हूँ: और जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह किसी रीति से लज्जित नहीं होगा। [7]अतः तुम्हारे लिये जो विश्वास करते हो वह तो बहुमूल्य है, पर जो विश्वास नहीं करते उनके लिये जिस पत्थर को राज मिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा हो गया, [8]और ठेस लगने का पत्थर और ठोकर खाने की चट्टान हो गया है, क्योंकि वे तो वचन को न मानकर ठोकर खाते हैं और इसी के लिये वे ठहराए भी गए थे।

मसीह में नए जीवन से अगले पद में पत्थर के रूपक में जाना असंगत लगता है। प्रेरित ने पुराने नियम से बाइबल अंश को चुना जहाँ पर पत्थरों को बल और स्थिरता के लिए आलंकारिक रूप से प्रयोग किया गया था और उसे मसीह और उसके लोगों पर लागू किया। यीशु कोने का पत्थर है, रद्द किया हुआ पत्थर और ठोकर लगने का पत्थर। आगे, उसके लोग परमेश्वर के मन्दिर में पत्थर हैं। मसीही मसीह के गुणों के भागी होते हैं जब वे अपने जीवनों को उसके आदर्श स्वरूप चलाते हैं। जीवित पत्थरों के रूप में वे परमेश्वर का भवन बनते जाते हैं।

आयत 4. पहला पतरस की पत्री के इस भाग में अलंकार बारंबार और रंगबिरंगे आए हैं। प्राणी घास के समान है; मनुष्य की शोभा फूल के समान है (1:24)। मसीहियों को नव जन्मे बच्चों की तरह तीव्रता से दूध की इच्छा करनी है (2:2)। यीशु **एक जीवता पत्थर है ... जिसे मनुष्यों ने तो निकम्मा ठहराया**[4] पतरस के पाठक, स्वयं प्रभु की तरह "जीवित पत्थर हैं।" वे "एक आत्मिक घर हैं" या अलग ढंग से विचार किया गया, वे "याजकों का एक पवित्र समाज" हैं (2:5)। प्रत्येक अलंकार मसीहियों को कुछ अतिरिक्त दृष्टि कोणों पर विचार करने के लिए चुनौती देता है कि मसीह के अनुयायी होने का अर्थ क्या है। इसे सुन्दर बनाने के लिए, बाद के पदों में पतरस ने कहा कि मसीही "चुना हुआ वंश" और "एक पवित्र जाति" है (2:9)। प्रेरित ने अलंकारों को चुना ताकि उसके पाठक अपने चुने हुओं के रूप में और परमेश्वर के चुने हुए इस्राएल के बीच में एक निरन्तरता को देख सकें।

2:4 से पहले, पतरस ने कष्टों का सामना करते समय मसीही जीवन की

पवित्रता पर अपने ध्यान को केन्द्रित किया। अब उसका ध्यान और भी स्पष्ट रूप से विश्वासी एक समाज के रूप में की ओर गया, मसीहियत किसकी है माना गया और लोगों के द्वारा परिभाषित करना जिनके साथ वह अपना अंगीकार और आशा साझा करते हैं।

यह बहुत महत्वपूर्ण है कि मसीही यीशु के पास आने पर "जीवित पत्थर" के रूप में परिभाषित किए गए हैं। पतरस ने बाद के पदों में जोड़ा कि यीशु "एक अमूल्य कोने का पत्थर" है (2:6)। पतरस के द्वारा दिए गए इस अलंकार को लेकर कुछ अनिश्चितता है। जोआकीम जेरेमियास ने बताया कि अनुवादित शब्द "कोने का पत्थर" इसे नींव का पत्थर के रूप में उल्लेख करने की जरूरत नहीं है। उसने तर्क दिया कि अलंकार सम्भवतः यीशु को प्रधान पत्थर या भवन के शीर्ष पत्थर के रूप में चित्रित करता है।[5] चाहे पतरस चाहता था कि उसके पाठक यीशु को इस रूप में समझें (1) नींव पत्थर, या (2) शीर्ष पत्थर, जो कुछ भिन्नता उत्पन्न करता है जो प्रेरित बात कहता है। प्रधान पत्थर के रूप में, विश्वासी इस बात को समझ जाएँगे यीशु वह है जो मानवता के लिए परमेश्वर के सभी उद्देश्यों में सफलता लाया है, या सम्भवतः यह कि उसके द्वारा विश्वास के परिणाम को अन्ततः समझा गया है। परन्तु यह सन्देह जनक है कि जेरेमियास सही था। पौलुस ने भी इफिसियों 2:20 में उसी शब्द का प्रयोग किया, "कोने का पत्थर," जहाँ पर संदर्भ इस बात को स्पष्ट करता है कि "नींव के पत्थर" का अर्थ है। आगे, 1 पतरस 2:6 में वाक्य यह है, "मैं सिय्योन में बहुमूल्य कोने के पत्थर को धरता हूँ।" पत्थर धरने का अर्थ है नींव का पत्थर।

यह कहना कि यीशु या उसके अनुयायी "जीवित पत्थर" थे, प्रथम प्रभाव में, एक विरोधाभास सा प्रतीत होता है। पत्थर तो निर्जीव होते हैं। जीवित पत्थर की बजाय "निर्जीव पत्थर" अधिक समझ में आने वाला अलंकार है। उसके शब्द नये नियम के परिचित विषय की ओर मुड़ते हैं, पत्थर जो राज मिस्त्रियों के द्वारा रद्द किया गया (भजन संहिता 118:22; मत्ती 21:42; मरकुस 12:10; लूका 20:17; प्रेरितों के काम 4:11)। प्रेरित चाहता था कि उसके पाठक जान जाएँ कि कलीसियाई जीवन का कोने का पत्थर यीशु है। वही वह मानक है जिसके द्वारा इसके विश्वास और व्यवहार को मापा जाएगा। यही यीशु नींव का पत्थर है, कोने का पत्थर, थोड़ी कठिनाई को लाता है, परन्तु प्रभु के विषय कहें कि वह "जीवित पत्थर" है तो यह साहसिक अलंकार है। पतरस उपेक्षा नहीं करता है। जीवन परमेश्वर का सहज गुण है, इसलिए यह मसीह के साथ है (यूहन्ना 1:4)। यह मृतक यीशु नहीं है, परन्तु मृतकों में से जीवित प्रभु है, जिसकी मसीही लोग आराधना करते हैं। वह सक्रिय रूप से अपनी कलीसिया के जीवन में शामिल है। जब उसके लोग उसे पुकारते हैं, वह सुनता और कार्य करता है। यीशु परमेश्वर के दाहिने हाथ जीवित है, वहाँ से दोबारा आएगा और तब आशा सिद्ध की जाएगी। यीशु जीवित है; यीशु पत्थर है। प्रत्येक अलंकार मसीहियों को प्रभु जिसकी वे सेवा करते हैं उसकी समझ में बढ़ने के लिए सहायता करते हैं।

मसीही लोग मसीह की आशीषों का इस स्तर तक आनन्द उठाते हैं कि **वे**

उसके पास आ रहे हैं। वही क्रिया जो पतरस ने प्रयोग की "आ रहा है" (προσέρχομαι, *प्रोकेरकोमाय)*, इब्रानियों 4:16 में "निकट आओ" का अनुवाद किया गया है: "इसलिये आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर चलें," परमेश्वर के द्वारा निकट आने के निमन्त्रण को हल्के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए। परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति में बड़ा भयानक भय है। यशायाह ने परमेश्वर को मन्दिर में देखा, वह भय से घिर गया। "हाय! हाय! मैं नाश हुआ ... क्योंकि मैं ने सेनाओं के यहोवा महा राजाधिराज को अपनी आंखों से देखा है!" (यशायाह 6:5)। यहाँ तक कि एक याजक के लिए अश्रद्धा के साथ परमेश्वर के पास जाना बड़ी खतरे की बात थी, जैसा कि हारून के दो पुत्रों ने पाया (लैव्यव्यवस्था 10:1, 2)। परमेश्वर की उपस्थिति में आना, चाहे प्रार्थना के लिए या आराधना के लिए यह कभी भी हल्की बात नहीं होती, परन्तु मसीही उसके पास बड़े साहस के साथ आते हैं। उद्धारकर्ता जिसकी सेवा मसीही लोग करते हैं उसने मानवीय देह धारण की और मानवीय पाप के लिए मर गया; उन्होंने इस बात को परखा है कि वह दयालु है। जीवित परमेश्वर की उपस्थिति में आना भयानक बात हो सकती है, परन्तु मसीह जो मध्यस्थ है उसके साथ एक विश्वासी "उसके पास आ" जा सकता है।

विडम्बना यह है कि यह जो जीवित पत्थर है जिसके द्वारा मनुष्य परमेश्वर के नजदीक आते हैं इसको मनुष्यों के द्वारा "अस्वीकृत किया गया" था। "वह अपने घर में आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया" (यूहन्ना 1:11)। प्रेरित ने स्वयं प्रभु के नेतृत्व का अनुसरण किया जब उसने अपने पाठकों को स्मरण करवाया कि यीशु वह पत्थर था जिसे राज मिस्त्रियों ने रद्द किया था, परन्तु जिसे परमेश्वर ने कोने का पत्थर होने के लिए चुना था (लूका 20:17)। मनुष्यों के द्वारा उसे स्वीकार किए जाने या रद्द किए जाने से बढ़कर महत्वपूर्ण यह तथ्य है कि यीशु परमेश्वर के लिए **चुना हुआ और बहुमूल्य** है। अन्य अनुवादों ने किया है "चुना हुआ और बहुमूल्य" - (NRSV; देखें KJV; NIV)। प्रेरित ने पहले ही से "चुना हुआ" शब्द का प्रयोग किया है (1:1)। अर्थ यह है कि जैसा कि यीशु चुना हुआ और बहुमूल्य था भले ही वह मनुष्यों के द्वारा रद्द किया गया था, पतरस के पाठक भी मनुष्यों के द्वारा लाए गए सताव को सहने के द्वारा चुने हुए और बहुमूल्य थे। उनके कष्ट और परीक्षाएं इस बात का यह संकेत नहीं था कि परमेश्वर ने उन्हें त्याग दिया है। वे तो यीशु के पद चिन्हों पर चल रहे थे (2:21)।

आयत 5. यह पक्का नहीं है कि पतरस चाहता हो कि उसके पाठक यरूशलेम में मन्दिर के विषय सोचें जब उसने यह शब्द प्रयोग किया **आत्मिक घर**। पुराना नियम में "घर" शब्द आम तौर पर मन्दिर के लिए प्रयोग किया गया है।[6] अपने सामाजिक और राष्ट्रीय अस्तित्व के लिए केन्द्र बिन्दु के रूप में मन्दिर से अलग हो जाना यहूदियों के लिए बहुत ही कठिन था (प्रेरितों 6:13, 14)। यीशु ने संकेत दिया था कि स्वयं उसने, उसकी अपनी देह ने अपने चुने हुए लोगों के साथ परमेश्वर के सम्बन्ध में सबसे महत्वपूर्ण सच्चाई के रूप में मन्दिर का स्थान लेना था (यूहन्ना 2:19-21)। मन्दिर मूसा की व्यवस्था और यहूदियों के

राष्ट्रीय जीवन का एक संस्थान था। मसीही लोगों को यह विचार क्यों नहीं त्याग देना चाहिए? इस प्रश्न का पतरस के लिए उत्तर यह है कि मन्दिर मसीहियों को कि वे कौन हैं इस विषय महत्वपूर्ण बातें सिखा सकता है। यह कहने के बाद कि यीशु "जीवित पत्थर" है, प्रेरित ने निर्माण के रूपक को यह कहते हुए जारी रखा कि मसीही "आत्मिक घर बनते जाते हैं।"

पुराना नियम की धारणाओं में कि नया नियम परमेश्वर के मन्दिर के प्रति समर्पण का इनकार करता है। मन्दिर के रूप में यह वह स्थान था जहाँ पुराने नियम में परमेश्वर ने अपने नाम रखा था और अपनी उपस्थिति को ज्ञात करवाया था, इसलिए नया नियम में मन्दिर वह स्थान है जहाँ परमेश्वर वास करता है। वहाँ मन्दिर बना रहता है। पहाड़ी मन्दिर के भव्य पत्थरों के समान (मरकुस 13:1), इस नए मन्दिर के जीवित पत्थर असीम रूप से अति बहुमूल्य हैं। चकाचौंध करने वाले सोने पत्थर और आभूषणों की बजाय परमेश्वर के मन्दिर के पत्थर विश्वास और भले मसीही आचरण से सुन्दर बनाए गए हैं। एक रूपक जिसका प्रयोग नए नियम के लेखकों को करना भला लगा वह यह था कि कलीसिया मिलकर बड़े अद्‌भुत रीति से एक भवन के समान बनती है अर्थात एक मन्दिर जहाँ परमेश्वर वास करता है (1 कुरिन्थियों 3:16, 17; इफिसियों 2:21; इब्रानियों 3:6)।

यह बड़ी दिलचस्प बात है कि पतरस ने अपनी पत्रियों में "कलीसिया" का प्रयोग नहीं किया। इसके साथ ही साथ प्रेरित वास्तव में मसीही जीवन के सामाजिक व्यवहार के प्रति जागरूक था। आयत 5 में उसने विश्वासियों को सामूहिक रूप से "आत्मिक घर" कहने के द्वारा मसीही परस्पर निर्भरता को प्रस्तुत किया। 5:2 में, प्रेरित ने विश्वासियों को "परमेश्वर का झुण्ड" कहा। जब उसने प्रभु की कलीसिया को "आत्मिक घर" कहा तो कुल मिलाकर पतरस का इरादा क्या है स्पष्ट नहीं है। "आत्मिक" शब्द को नया नियम में कई तरह से प्रयोग किया गया है। यह सम्भावनाएँ हैं: (1) कलीसिया "एक आत्मिक घर" है क्योंकि यह भौतिक चीजों से नहीं बना है। शब्द के अर्थ का आभास होता है वाक्यांशों में इस "आत्मिक बलिदान" (2:5 में भी), "आत्मिक चट्टान" (1 कुरिन्थियों 10:4) और "आत्मिक देह" (1 कुरिन्थियों 15:44)। (2) पौलुस ने इस बात की पुष्टि की कि पवित्र आत्मा मसीहियों में वास करता है (रोमियों 8:14-16)। कलीसिया "आत्मिक घर" हो सकती है क्योंकि पवित्र आत्मा इसमें वास करता है। (3) विचार यह हो सकता है कि क्योंकि पवित्र आत्मा कलीसिया की अगुआई करता है, इसलिए वह "आत्मिक घर" है। यह आत्मिक है जैसे व्यवस्था आत्मिक थी (रोमियों 7:14), या वरदान आत्मिक थे (1 कुरिन्थियों 12:1) - क्योंकि वे पवित्र आत्मा के द्वारा उसकी इच्छा को पूरा करने के लिए एक साधन के रूप में प्रयोग किए गए। तीसरी सम्भावना सर्वश्रेष्ठ है। परमेश्वर के लोग जीवित पत्थरों से बने हुए "आत्मिक घर" हैं, क्योंकि पवित्र आत्मा कलीसिया में और कलीसिया के द्वारा कार्य करता है।

कोई व्यक्ति अर्थ प्रकट करने के लिए "आत्मिक" शब्द को जो समझता है वही

बनते जाओ की क्रिया की उसकी व्याख्या पर प्रभाव डालेगा। यह एक कथन हो सकता है, "आप बन रहे हो," या एक आदेश हो सकता है, "स्वयं को बनाओ।" इस उदाहरण में यूनानी भाषा सूचक क्रिया में या आदेशात्मक भाव में कोई भेद नहीं करता है। NRSV क्रिया को आदेशात्मक के रूप में लेता है जबकि NASB सूचक रूप में लेता है। NASB अपनी बात में बेहतर है। जब विश्वासी मसीह के देह के जीवन में सहभागी होते हैं, पवित्र आत्मा "आत्मिक घर" बनने के लिए उनमें कार्य करता है जिससे परमेश्वर की महिमा होगी।

बहुरूप दर्शक (एक खिलौना जिसमें नाना प्रकार के रंग और रूप दिखाई पड़ते हैं) की तरह पतरस ने अपनी आकृतियों को पत्थरों से मन्दिर और याजकों और फिर बलिदानों में बदला है जो बलिदान चढ़ाते हैं, स्वयं को अर्पित करते हैं। विश्वासी पत्थर, मन्दिर और **पवित्र याजकीय समाज** हैं। मूसा की व्यवस्था के अंतर्गत याजक लोगों और परमेश्वर के बीच खड़े होते थे। केवल याजक ही बलिदान चढ़ा सकते थे। इस्राएल के पहले राजा शाऊल ने बलिदान चढ़ाकर परमेश्वर को अप्रसन्न किया जबकि वह याजक नहीं था (1 शमूएल 13:8-14)। सभी इस्राएली याजक नहीं थे परन्तु सभी मसीही याजक हैं। सुधार की एक बहुत बड़ी पुकार सभी विश्वासियों के याजक होने की है (प्रकाशितवाक्य 1:6), भले ही व्यवस्था में धारणा स्पष्ट नहीं है (निर्गमन 19:6; देखें यशायाह 61:6)। हारून के पुत्रों के समान जिनके पास इस्राएल की भेटों को परमेश्वर के पास ले जाने का विशेषाधिकार था, मसीही लोग बड़े साहस के साथ परमेश्वर की उपस्थिति में आ सकते हैं, अपनी ही भेटों को चढ़ा सकते हैं। परमेश्वर किसी से पक्षपात नहीं करता है। उसका प्रत्येक बच्चा उसके पास जा सकता है क्योंकि प्रत्येक उसकी दृष्टि में याजक है।

विश्वासियों का "आत्मिक घर" बनाया गया है उसी के अनुरूप उन्हें चाहिए कि ऐसे **आत्मिक बलिदान चढ़ाओ जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हों**। यूनानी और इब्रानी दोनों ही भाषाओं में बलिदान का अर्थ रक्त बलिदान है। बलिदान में पशु का वध किया जाता था, परन्तु परमेश्वर को अन्य भेंट चढ़ाने के लिए इस शब्द को आलंकारिक रूप से प्रयोग किया गया। भजनकार लिखता है, "परमेश्वर को धन्यवाद ही का बलिदान चढ़ा" (भजन 50:14); "क्योंकि तू मेल बलि से प्रसन्न नहीं होता, नहीं तो मैं देता" (भजन 51:16)। स्पष्ट रूप से इब्रानियों के लेखक के मन में रक्त बलिदान का विचार नहीं था जब उसने लिखा, "इसलिये हम उसके द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान, अर्थात् उन होंठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिये सर्वदा चढ़ाया करें" (इब्रानियों 13:15)।

जब बाइबल यूनानी और इब्रानी भाषा से लतीनी भाषा में अनुवाद की गई, कभी-कभी लतीनी भाषा ने शब्द बलिदान का प्रयोग किया है, जिसका अर्थ है "पवित्र भेंट," "परमेश्वर को अर्पित की गई भेंट।" शब्द की कमी के कारण जिसका अर्थ है "एक रक्त बलिदान," अंग्रेजी अनुवादों ने नियमित रूप से लतीनी भाषा से शब्दों को लिया और ऐसे शब्द दिए जिनका अर्थ "बलिदान" के साथ "लहू की

भेंट" है। यह कोई गलत चयन नहीं है। बलिदान, वास्तव में भेंट थे जो परमेश्वर के लोग उसके पास उसको देने के लिए लाते थे। यह बड़े दुख की बात है कि "बलिदान" के आम चलन का अर्थ बदल गया है। इस का अर्थ परमेश्वर को "भेंट चढ़ाना" था, परन्तु आज के अधिकांश लोगों के लिए बलिदान का अर्थ है "अपने आपको किसी चीज़ से वंचित करना।" बलिदान का केन्द्र बिन्दु इस बात पर नहीं होना चाहिए कि आराधक स्वयं को किस बात से वंचित करता है, परन्तु देने के द्वारा अपने प्रेम को प्रकट करने की उसकी इच्छा पर होना चाहिए। मसीही लोग परमेश्वर को कुछ भी देने को तैयार रहें यही अनोखी बात है। परमेश्वर हमें उसे देने देता है क्योंकि देना प्रेम के प्रकटीकरण का मूल आधार है।

आयत 6. प्रेरित ने इसे हल्के रूप में लिया कि **पवित्रशास्त्र** अर्थात पुराना नियम का उल्लेख उसका समर्थन करे जिसकी उसने आयत 4 और 5 में पुष्टि की। इस्राएल के लिए परमेश्वर के प्रकाशन में, मसीहियों ने यीशु नासरी को पाया। पतरस ने बाइबल अंश का एक संग्रह प्रस्तुत किया : यशायाह 28:16; भजन 118:22; यशायाह 8:14. इन बाइबल अंशों का आम विषय न ही पुराना नियम में उनके समायोजन में है और न ही उनकी शिक्षा में है। बल्कि उनके प्रयोग किए गए शब्द "पत्थर" में है। पहला अंश यशायाह 28:16 LXX (सप्तति अनुवाद) का सटीक उल्लेख नहीं है, परन्तु इसमें कई मिलते जुलते शब्द हैं। अन्तिम वाक्य, "और वह जो उस पर विश्वास करता है ... ," शब्दश: LXX से है। पौलुस ने इसी अंश का उल्लेख रोमियों 9:33 में किया जहाँ वह इसे यशायाह 8:14 के साथ जोड़ता है। इस उल्लेख में यह बात कही गई कि यहूदियों के द्वारा यीशु को व्यर्थ ठहराया गया।

पाठक जो यशायाह 28:16 की इस संदर्भ में जाँच करता है शीघ्र ही वह देखेगा कि नबी उन लोगों के विषय लिखता आ रहा है "यरूशलेम में इन लोगों पर शासन करते थे" (यशायाह 28:14)। वह इस्राएल के धार्मिक अगुओं के विषय बात कर रहा था। नबी के द्वारा, परमेश्वर ने एक अन्य शासक की प्रतिज्ञा की जो वर्तमान के शासकों से विपरीत होगा, जो "न्याय की डोरी और धर्म को साहुल ठहराएगा" (यशायाह 28:17)। क्या यशायाह के मन में यीशु था जब उसने यह लिखा? इसे जानने का कोई उपाय नहीं है, परन्तु पतरस जो स्वयं प्रेरणा पाया हुआ प्रेरित था और नबी तर्क करता है कि यीशु वास्तव में बहुमूल्य **कोने का पत्थर है** जिसे परमेश्वर ने **सिय्योन में** धरा है। कोने के पत्थर के रूप में यीशु उन सब का माप बन गया है जिसकी परमेश्वर अपने लोगों में चाहत करता है। भवन में प्रत्येक जीवित पत्थर, सभी मसीही, परमेश्वर के साथ और कोने के पत्थर के साथ सम्बन्ध के द्वारा अपने संगी विश्वासियों के साथ अपनी दिशा पाते हैं। यशायाह 28:16 का उल्लेख करने के द्वारा, उसी समय पतरस ने वास्तविक और आत्मिक इस्राएल के बीच सम्बन्ध को चित्रित किया और दर्शाया कि परमेश्वर ने मौलिक रूप से मसीह में कुछ नया किया है। अर्नस्ट बेस्ट ने लिखा कि मसीह में "परमेश्वर ने कुछ नया बनाया अर्थात मनुष्य का छुटकारा।"[7]

"सिय्योन," उचित रीति से कहा जाए तो दाऊदपुर था, जो मन्दिर पहाड़ी के

दक्षिणी चोटी की ओर दाऊद का नगर था (2 शमूएल 5:7)। समय के साथ-साथ, शब्दादेश के द्वारा, यह नाम सारे यरूशलेम पर (भजन संहिता 102:21) और फिर विशेष पहाड़ी पर मन्दिर पर लागू हुआ (यशायाह 8:18; मीका 4:7)। क्योंकि पतरस ने अभी-अभी दृढ़ता पूर्वक कहा था कि यीशु और जो लोग उस पर विश्वास करते हैं "आत्मिक घर" में "जीवित पत्थर" हैं, इस पद में "सिय्योन" सम्भावित रूप से मन्दिर पहाड़ी का उल्लेख है।

यीशु के सम्बन्ध में, **चुना हुआ पत्थर** "सिय्योन" में धरा गया, पतरस ने कहा कि **वह जो उसमें विश्वास करता है निराश नहीं होगा**। उसने दृढ़, जोरदार नकारात्मक οὐ μή *(ऊ मे)* प्रयोग किया। इसमें निश्चित रूप से कोई सम्भावना नहीं कि उस पर विश्वास करने से कोई निराशा होगी। यूनानी शब्द καταισχύνω *(कटैसकुनो)*, NASB में "निराशा" अनुवाद किया गया है, आम तौर पर इसे "लज्जित करने के लिए" लिया जाता है। NIV का है "वह कभी लज्जित नहीं होगा।" वह व्यक्ति जो मसीह में विश्वास रखता है, अपमान और लज्जा का कभी अवसर नहीं है। "लज्जा" यूनानी-रोमी जगत में जो अंग्रेजी शब्द सुझाता है उससे बढ़कर दृढ़ सामाजिक भाग था। अंग्रेजी के समकालीन लज्जा विशाल रूप से आंतरिक, मानसिक भाव है। उस यूनानी जगत में जहाँ पतरस रहता था उसने लज्जा को इस तरह से लिया होगा समकालीन व्यक्ति या सम्भवतः परमेश्वर के सामने निराश चेहरा हो।

आयत 7. कई टीकाकार आग्रह करते हैं कि जहाँ NASB में **तुम्हारे लिये जो विश्वास करते हो उससे बढ़कर यह बहुमूल्य है**, बेहतर अनुवाद ऐसा होगा "इसलिए आप विश्वासियों के लिए आदर है।" इसमें न केवल व्याकरण की दृष्टि से उचित है, यह पद 2:6 के अन्त में "लज्जा" के साथ बढ़िया विषमता प्रदान करता है। फ्रांसिस राईट बीअर उन लोगों में से है जो इस अनुवाद पर वाद विवाद करते हैं। उसने लिखा, "आदर जो विश्वासियों को दिया गया है यह उस आदर का भाग है जो परमेश्वर ने मसीह को दिया, जिसके साथ वे आत्मिक घर के भवन में एक हैं।"[8] NASB के अनुवादकों ने यूनानी वाक्य को बीअर से हटकर समझा। उन्होंने बहुमूल्य को समझा जो मसीहियों के लिए होता है परमेश्वर ने सिय्योन में अमूल्य पत्थर को धरा।

भजन संहिता 118:22 में उल्लेख (117:22 LXX में) ने उन लोगों के परिणाम का वर्णन किया **जो विश्वास नहीं करते**। यीशु ने मत्ती 21:42 में भजन संहिता का उल्लेख किया और पतरस ने प्रेरितों के काम 4:11 में उल्लेख किया। दोनों ही मामलों में यह यहूदी नेतृत्व था जो राज मिस्त्री थे जिन्होंने यीशु को व्यर्थ ठहराया। पतरस की बात मौलिक रूप से जो यीशु ने कही थी या जो उसने प्रेरितों के काम 4:11 में कही थी भिन्न नहीं थी। यहूदी नेतृत्व अभी भी **राज मिस्त्री** ही था जिसने मसीह अर्थात **पत्थर** को **निकम्मा ठहराया** था। भले ही यही मामला था, पतरस ने उसे अन्य जातियों की बड़ी भीड़ के सामने घोषित किया, परमेश्वर ने उसी व्यर्थ ठहराए हुए पत्थर को **कोने के सिरे का पत्थर बना दिया**। यूनानी वाक्य और भी शाब्दिक है "कोने का सिरा" (KJV; ASV)।

यह तो असम्भव है कि "कोने के सिरे" का अर्थ 2:6 में सिय्योन में धरे गए पत्थर से भिन्न हो, भले ही "कोने का सिरा" अपने आप में मुख्य शिला का उल्लेख करता है। इस संदर्भ में कोने का पत्थर पहले के आयत में (2:6) और बाद के आयत (2:8) में "ठेस लगने का पत्थर," बताता है कि "कोने का सिरा" और "कोने का पत्थर" पर्यायवाची हैं। मुख्य शिला से ठोकर लगने से किसी को परेशानी होगी, भवन में ऊँचे पर लगे पत्थर से। परमेश्वर ने यीशु को "सिरे का पत्थर" बनाया था उनके लिए वह एक साक्षी था जिन्होंने उस विश्वास नहीं किया था। इसने प्रमाणित किया कि परमेश्वर यीशु के जीवन और उसके लोगों के जीवन में सक्रिय था।

आयत 8. इस आयत का पहला भाग, **एक ठेस लगने का पत्थर और ठोकर खाने की चट्टान** यह इब्रानी से यूनानी में यशायाह 8:14 का अस्पष्ट अनुवाद है। यशायाह के द्वारा बोलते हुए, परमेश्वर ने पुष्टि की कि वह पवित्र परमेश्वर है और उसका भय मानना चाहिए। वे जो बुरी योजनाएं बनाते हैं वे नहीं डरते। परमेश्वर उस पर भरोसा करने वालों के लिए पवित्र स्थान है, परन्तु यहूदा और इस्राएल के लिए वह ठोकर खाने की चट्टान बन गया था। पतरस ने यशायाह के शब्दों में देखा जो उसके सम कालीनों पर लागू हुआ। उनके लिए जिन्होंने विश्वास नहीं किया, परमेश्वर ने न केवल यीशु को कोने का सिरा ही बनाया, परन्तु वह ठेस लगने का, ठोकर खाने का कारक बन गया। पतरस के केवल दो ही प्रकार के लोगों के विषय सोचा। ऐसे भी हैं जो यीशु पर भरोसा करते थे और वे जिन्होंने ठोकर खाई और भरोसा नहीं किया।

इस आयत का अन्तिम भाग कठिन है। शाब्दिक रूप से इसे पढ़ा जाता है, "इसी के लिये वे ठहराए भी गए थे।" सुधारक धर्म ज्ञानी इस आयत में व्यक्तिगत पहले से ठहराए जाने को देखने के लिए सचेत रहे हैं। उस व्याख्या के साथ समस्या यह है कि अपनी सम्पूर्ण पत्री में पतरस अपने पाठकों को आज्ञा मानने के लिए, पाप से मुड़ने के लिए, संयमी रहने के लिए, निष्ठा से आशा रखने के लिए और इस तरह की अन्य बातों के लिए कहता आ रहा है। यदि पतरस के पाठक व्यक्तिगत रूप से समय रहित अनन्तकाल में परमेश्वर के सर्वश्रेष्ठ नियम के कार्य के द्वारा अनन्त जीवन या अनन्त दण्ड के लिए ठहराए गए थे, तो प्रेरित की चेतावनियाँ एक उपहास ही बन जाती हैं। परमेश्वर का लोगों को बुलाना इस बात में कोई अर्थ नहीं रह जाता क्योंकि उनकी नियति तो पहले ही से ठहराई गई है। NASB एक शब्द "नाश" को इस वाक्य में इटैलिक रूप में रखती है कि **वे इस नाश के लिए ठहराए गए हैं**। यह इटैलिक संकेत करता है कि अनुवादकों ने इस शब्द को जोड़ा है।

पतरस का अर्थ यह है कि परमेश्वर को पूर्वज्ञान था कि कुछ लोग **वचन को न मानकर ठोकर खाते हैं**, तब भी जब उसने उद्धारक के रूप में अपने पुत्र को भेजा। इससे तो पतरस के पाठकों को आश्चर्यजनक नहीं होना चाहिए था कि कुछ ठोकर खाएंगे। पतरस के मन में व्यक्ति नहीं थे, जिनमें से कुछ अवज्ञा के लिए पहले से ठहराए गए हैं। इसके बजाय उसने यह पुष्टि की कि मनुष्य जाति को छुड़ाने के

लिए परमेश्वर की योजना पूरी हुई है, पूर्ण जागरूकता के साथ कि कुछ मसीह में विश्वास करेंगे और कुछ ठोकर खाएंगे।

अन्धकार से ज्योति में बुलाए गए (2:9, 10)

9पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिये कि जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो। 10तुम पहले तो कुछ भी नहीं थे पर अब परमेश्वर की प्रजा हो; तुम पर दया नहीं हुई थी पर अब तुम पर दया हुई है।

कलीसिया और इस्राएल के बीच की अखंडता पतरस के मन से कभी दूर नहीं हुई थी। प्रेरित मसीही लोगों के साथ, परमेश्वर के द्वारा चुने हुए और मिस्र से बाहर बुलाए गए के समीकरण से परे चला गया। मसीह में होने का अर्थ है चुने हुए वंश का भाग होना, परन्तु हारून के याजकीय पद में भी भाग है। एक कौम के रूप में इस्राएल की पवित्रता गम्भीर रूप से अक्सर दोषपूर्ण रहती थी। मसीह के कार्य ने उस सबको बदल दिया। अब जो लोग कुछ भी नहीं थे परमेश्वर के लोग बन गए हैं।

आयत 9. इस वाक्य के आरम्भ में शब्द **तुम** पर जोर दिया गया है। यह कहने के बाद कि मसीह से अवज्ञाकारी ठोकर खाएंगे, पतरस ने कहा, "परन्तु तुम," और उन्हें बताया वे कुल मिलाकर भिन्न थे। जैसे NASB में यह आयत प्रकट होता है, प्रेरित ने मसीहियों के चार अलंकार प्रयोग किए। प्रत्येक संज्ञा का एक विशेषक है: **वंश चुना हुआ** है, **याजकों** का **समाज** राज-पदधारी है, **लोग पवित्र**, और **परमेश्वर की निज प्रजा है**। उसकी सोच को पर्याप्त रूप से बदलने के लिए अलंकारों को एक यहूदी मसीही की आवश्यकता होगी। सम्भवतः यहूदी आत्म जागरूकता के लिए इससे बढ़कर कुछ नहीं था कि परमेश्वर ने उन्हें चुन लिया है। इस्राएल अकेला ही परमेश्वर के चुने हुए के रूप में रहा। अन्य जातियाँ चुनी हुई नहीं थी। पतरस स्वयं एक यहूदी था, इस्राएल को बुलावा नहीं देता अर्थात सारी मानवजाति के द्वारा अविभाजित। मसीह के द्वारा प्रत्येक जाति से चुना हुआ वंश और वे लोग जिन्होंने बुलाहट को स्वीकार किया। प्रेरित ने कुरनेलियुस और उसके घराने से कहा था, "अब मुझे निश्चय हुआ, कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता, वरन हर जाति में जो उस से डरता और धर्म के काम करता है, वह उसे भाता है" (प्रेरितों के काम 10:34, 35)।

यह पतरस के लिए बहुत ही असामान्य बात थी कि उन धारणाओं और वाक्यों को ले जिनकी जड़ें इस्राएल के इतिहास में गहराई से है और उन्हें "नए इस्राएल" अर्थात यीशु मसीह की कलीसिया के नए रूप में ढाल दे। पहला विशेषण/संज्ञा संयोजन, "वंश चुना हुआ" निष्पक्ष रूप से स्पष्ट है। पतरस ने पहले ही अपने पाठकों को "चुने हुए" कहा है। अप्रामाणिक पुस्तक में जिसे अक्सर

प्रोटेस्टेंट लोगों द्वारा 2 एसड्रास कहा गया है, एज्रा ने परमेश्वर से शिकायत की कि वे लोग, भले ही चुने हुए थे, पर उन्होंने अनोखी आपदाओं को सहा। अपनी प्रार्थना में उसने परमेश्वर को इस्राएल की स्थिति "चुना हुआ" याद करवाया।

> "मेरे स्वामी और मेरे प्रभु," मैंने कहा, "धरती के समस्त वन में से और इसके सभी वृक्षों में से, आपने एक दाखलता को चुना है; संसार की सब देशों में से आपने एक स्थान को चुना है; संसार के सभी फूलों में से आपने एक लिली के फूल को चुना है। समुद्र की सारी गहराइयों से आपने एक नदी को अपने लिए भरा है और अब तक के बने हुए सभी नगरों में से आपने-अपने लिए सिय्योन को अपना होने के लिए अलग किया है। समस्त पक्षी जो आपने रचे उनमें से अपने लिए कबूतर का ही नाम दिया है, और बनाए गए सभी पशुओं में से आपने - अपने लिए एक भेड़ को ही लिया है। असंख्य जातियों में से आपने अपने लिए एक को ही अपना होने के लिए अपनाया है और अपने चुने हुए लोगों को सबसे बढ़कर उनको अपनी व्यवस्था दी।"[9]

पतरस के लिए, सांसारिक इस्राएल जाति ने इस दावे को त्यागना था कि मात्र वही परमेश्वर तक पहुँच सकते हैं। प्रेरित अपने पाठकों को यह समझाना चाहता था कि यहूदी और अन्यजाति दोनों ही मसीह में एक किए गए, चुने गए थे।

दूसरा विशेषण/संज्ञा संयोजन, याजकों का समाज "राज पदधारी" जटिल है। शब्द "राज पदधारी" (βασίλειον, *बासिलिओन)* से अनुवाद किया गया है जो कि नया नियम में मात्र लूका 7:25 में ही आता है। वहाँ पर यह संज्ञा है NASB में "राज भवनों" अनुवाद किया गया है। आगे चलकर वाक्य में पतरस के शब्द क्रम है "राज पदधारी याजकों का समाज" वह नहीं है जिसकी हम आशा करते हैं। "चुना हुआ वंश" और "पवित्र लोग" दोनों में ही विशेषण संज्ञा के बाद आती है। (यूनानी भाषा में विशेषण संज्ञा के या बाद में आकर इसका रूप बदलती है।) "राज पदधारी याजकों का समाज" के विषय में यह विपरीत है अर्थात अनुवादित शब्द "राज पदधारी" संज्ञा से पहले आता है। कोई व्यक्ति इन सभी तीनों वाक्यों को समानांतर होने की आशा करेगा। "राज पदधारी याजकों का समाज" (βασίλειον ἱεράτευμα, *बासिलिओन हीयरा टियुमा)* LXX में निर्गमन 19:6 से लिया गया है जहाँ भी इसका अर्थ अनिश्चित है।

यह विचार इस सम्भावना की ओर ले जाते हैं कि सम्भवतः अनुवादक इस वाक्य को गलत समझ गए। "राज" के शब्द को "राजभवन" में अनुवाद करने के द्वारा जैसे यह लूका 7:25 में है और शब्दों के बीच में अल्पविराम (कौमा) लगाने से, कोई व्यक्ति अनुवाद को ऐसे लेता है, "तुम चुने हुए लोग हो, एक राज भवन, एक याजकीय समाज, पवित्र लोग ... ।"[10] पतरस तो पहले ही मसीहियों को "जीवित पत्थर" कह चुका था जो आत्मिक घर बनते जाते हैं यह व्याख्या इसे आकर्षक बनाती है। परन्तु यह सत्य है कि बासिलिओन एक विशेषण हो सकता है। यदि "राज पदधारी याजकों का समाज" अर्थ है तो पतरस कह रहा था कि विश्वासी राजा की सेवा में याजक हैं अर्थात यीशु की सेवा में। वह मसीहियों को

राजसी गुणों के लिए उत्तरदायी नहीं ठहरा रहा था।

पतरस ने कहा कि उसके पाठक "याजकों का समाज" थे, वे व्यक्तिगत रूप से याजक नहीं थे। एक भिन्नता है। "याजकों का समाज" की आत्म-समझ समाज के अन्दर याजकीय क्रियाओं के अभ्यास से लिया गया है। कलीसिया का वर्णनात्मक "याजक पद" है जो इसकी सम्पूर्णता में माना गया है। यह "वंश" और "जाति" के समानांतर है। विश्वासियों की देह से अलग कोई "याजक पद" का कार्य नहीं है जैसे राष्ट्र के बाहर हारून के याजक पद का कोई कार्य नहीं है। पतरस ने "याजकों के समाज" के शब्द का प्रयोग किया (2:5, 9), परन्तु संदर्भ किसी न किसी तरह से शब्दों की भिन्नता को स्पष्ट करता है। 2:5 में, पतरस ने नामतः "याजक पद" के कार्यों को माना है, इसे परमेश्वर को ग्रहण योग्य बलिदान चढ़ाना था। 2:9 में, "याजक पद" का विचार इतना नहीं है याजक के कार्य याजकों के विशेषाधिकार की तरह हैं। पतरस के सभी अलंकार विशेषाधिकार के साथ सम्बन्ध रखते हैं। क्योंकि वह विश्वासियों के समाज में भागीदार हैं, मसीही "चुना हुआ वंश, राजसी निवास, याजकों का समाज, पवित्र लोग" होने के लिए स्वयं धन्य हैं।

विश्वासी भी धन्य हैं क्योंकि वे "परमेश्वर के निज लोग" हैं। यह वाक्य यशायाह 43:20, 21 के साथ मिलता जुलता है। यशायाह में, परमेश्वर की प्रतिज्ञा "मैं अपनी चुनी हुई प्रजा के लिए पीने को दूँगा। जिस प्रजा को मैंने बनाया है वह मेरा गुणानुवाद करेगी।" जैसे इस्राएल ने स्वयं को परमेश्वर के लिए बनाया हुआ समझा था, मसीहियों को परमेश्वर की निज प्रजा समझना है। उसने उन्हें चुना था। जब मसीहियों ने स्वयं को तिरस्कार में डुबा दिया जब अविश्वासियों ने उनकी विफलताओं के कारण उनका उपहास किया, तो उनको स्मरण करना चाहिए कि परमेश्वर उनको अपना बनाने का दावा करता है। यीशु इसमें अपने अनुयायियों की बड़ाई करने में बहुत आगे निकल गया: "तुम पृथ्वी के नमक हो ... तुम जगत की ज्योति हो" (मत्ती 5:13, 14)।

एक उद्देश्य के लिए मसीही परमेश्वर के हैं। मानवीय छुटकारा, पापों की क्षमा और अनन्त जीवन - यह सब एक मसीही के जीवन में विद्यमान हैं - यह मानवीय महिमा के लिए नहीं है परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिए है। **यह उसी की महिमा की घोषणा है जिसने तुम्हें बुलाया है** वह व्यक्ति जो मसीहियत को प्रतिस्पर्धा की विचारधाराओं की विभिन्नता में चुनाव करता है क्योंकि उसका यह भरोसा है उसकी जरूरत पूरी होने में यह उचित रहेगा वह पहले ही से हारा हुआ है। मसीही वह हैं जो परमेश्वर की "महिमा" की घोषणा करें। मसीह लोगों को निराशा और मायूसी से छुटकारा देता है, या जैसा पतरस ने कहा, **अन्धकार** में से अद्भुत ज्योति में। विरोधाभास यह है कि विश्वासी परमेश्वर की आशीषों का आनन्द उठाते हैं यह तभी होता है जब वे स्वयं को भूल जाते हैं और उसकी बड़ाई करते हैं।

आयत 10. प्रेरित अपने पाठकों के आत्मविश्वास को दृढ़ करने के लिए पुराना नियम की भाषा और अलंकार पर ध्यान आकर्षित करता रहा कि वे परमेश्वर के निज लोग थे। **कुछ भी नहीं** के लिए उसने (λαός, *लाओस)* शब्द का

प्रयोग किया यह इस्राएल के लिए अपेक्षित शब्द है। गैर यहूदी लोगों के लिए (ἔθνος, *इथनोस)* शब्द वर्णन करता है। पतरस ने होशे के प्रतिशब्द का उल्लेख नहीं किया, परन्तु शब्दों को आठवीं शताब्दी के नबी के विचार से लिया। उसने होशे के शब्दों को लिया अपने पाठकों की परिस्थिति के लिए इस संकेत के साथ नहीं कि वह उन शब्दों को उसी तरह से प्रयोग करना चाहता था जिस तरह से नबी ने किया था। होशे की नबूवत इतनी व्यक्तिगत थी कि उसकी पत्नी और बच्चे प्रतीक और चेतावनी बन गए थे। गोमेर, उसकी "वेश्या पत्नी" (होशे 1:2), नबी के लिए एक बेटी को जन्म दिया जिसका उसने नाम दिया "दया नहीं की गई" (होशे 1:6) और एक पुत्र जिसका उसने नाम दिया "मेरी प्रजा नहीं" (होशे 1:9)। अन्ततः परमेश्वर की दया इस्राएल के पाप पर विजयी हुई। "और मैं अपने लिये उसे देश में बोऊंगा, और लोरूहामा पर दया करूंगा, और लोअम्मी से कहूंगा, तू मेरी प्रजा है, और वह कहेगा, 'हे मेरे परमेश्वर'" (होशे 2:23)।

होशे के शब्दों से लेते हुए, पतरस ने उन्हें अपनी अन्य जाति मसीही बड़ी भीड़ के लिए एक आश्वासन के संदेश को पाया। **तुम पहले तो कुछ भी नहीं थे, उसने कहा, पर अब परमेश्वर की प्रजा हो; तुम पर दया नहीं हुई थी पर अब तुम पर दया हुई है।** पतरस का संदेश पुराना नियम होशे नबी की इस्राएल पर व्यभिचार और मूर्तिपूजा के लिए दण्ड की घोषणा से भिन्न है। साथ ही, होशे ने इस्राएल को आश्वासन दिया कि परमेश्वर की दया का कभी अंत नहीं होता है। उसने एक ऐसे दिन को पहले ही से भांप लिया था जब परमेश्वर अपने लोगों पर फिर से दया करेगा।

पतरस का संदेश होशे के संदेश से इस बात में भिन्न था कि पतरस के शब्दों में दण्ड नहीं था। अन्य जाति लोग पहले परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं और दया से अनभिज्ञ थे, परन्तु अब वे एक लोग अर्थात परमेश्वर के निज प्रजा थे। रोमियों 9:25, 26 में, पौलुस ने पतरस से बढ़कर स्पष्ट रूप से उल्लेख किया; परन्तु पतरस के लिए भी होशे के शब्दों को प्रकट किया कि परमेश्वर के लोग "न केवल यहूदियों में से हैं, परन्तु अन्य जातियों में से भी" हैं (रोमियों 9:24)। यदि पतरस ने रोमियों की पत्री को पढ़ा था, और इसकी अधिक सम्भावना है कि उसने पढा था, तो उसे पौलुस के विचारों का पता चता होगा। इसमें कोई संदेह नहीं कि पौलुस और पतरस के लेखों की कुछ शब्दावली और तर्कों में समानता होने का कारण दोनों प्रेरितों के सामान्य विचार हो सकते थे; परन्तु इस विवरण में 1 पतरस और रोमियों के बीच सम्पर्क की अनेक बातों का वर्णन नहीं होगा।

अनुप्रयोग

"निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो" (2:2)

पक्षियों में से जो मेरे डाले हुए दाने के आस पास आते हैं उन में से एक चिड़िया जिसे काउबर्ड कहते हैं। इसका रंग गहरा होता है भूरे सिर के साथ इसकी छोटी सी देह होती है। यह पक्षी दूसरे पक्षियों के घोंसलों में अपने अंडे

देती है। इस पक्षी के अंडों में से बच्चे अक्सर पहले निकलते है। और इसके बच्चे बड़े आकार में होते हैं और अन्य पक्षियों के बच्चों की तुलना में अधिक आक्रामक होते हैं। इनका पालन पोषण दूसरे बच्चों के भोजन पर होता है चिंतित माता पिता इनके भोजन के लिए लगातार चक्कर लगाते हैं। कभी-कभी तो यह इस पक्षी के बच्चे इतने बड़े हो जाते हैं अपने साथ के बच्चों को घोंसले के बाहर धकेल देते हैं। यदि कोई बच्चा बच जाता है तो यह वह इसी पक्षी काउबर्ड का बच्चा होता है।

काउबर्ड पक्षी के बच्चे मसीहियों के लिए एक शिक्षाप्रद दृष्टांत हैं। यह बड़ा ही साधारण सा संदेश है: इनका जैसा भी पोषण होता है, यह बढ़ता है और जीवित रहता है। किसी के जीवन का वह भाग जो बढ़ाता है और विकसित करता है, उसके पोषण पाने का भाग है। काउबर्ड पक्षी के बच्चे बढ़ते हैं इसका कारण इसके साथ के बच्चे हैं जिनसे इनको भोजन प्राप्त होता है। यह मनुष्यों के हृदयों में वास करने वाले प्रतिस्पर्धा की इच्छाओं से भिन्न नहीं होते हैं। जब कोई व्यक्ति उच्च इच्छाओं को विकसित करता है और उन्हें पोषित करता है तो वे बढ़ती हैं और विकसित होती हैं। मात्र यही नहीं, वे उन्हें संतुष्टि और आनन्द देती हैं जो उनका पोषण करते हैं। इसके दूसरी ओर, जब कोई व्यक्ति अपने स्वभाव को घिनौने और नीच बातों से पोषित करता है, अपने "शरीर" को जैसे पौलुस इसे कहता है, वह स्वयं भी उससे पोषण पाता है। काउबर्ड के समान, यह आक्रामक होता है। यह किसी व्यक्ति के अन्दर से अच्छे और उत्तम गुणों को बाहर धकेल देगा।

यीशु, सहायता का पत्थर (2:4-8)

जहाँ लेखक रहे वहाँ के देश और परिदृश्य के विचार से बाइबल के विषय समझने और सीखने के लिए कुछ बातें हैं। भू-मध्य सागर की पूर्वी छोर गर्म और शुष्क क्षेत्र है। उपजाऊ भूमि दुर्लभ होती है। सिंचाई के लिए अच्छी नदियाँ नहीं होती और अधिकांश क्षेत्र रेगिस्तान होता है। इस रेगिस्तान क्षेत्र को बाइबल में "निर्जन प्रदेश" कहा गया है।

वह देश जिसे इस्राएली ने अपना देश कहते थे इसमें बहुत से अभाव थे, परन्तु इसमें एक बात भरपूरी से थी। इसमें चट्टानें भरपूरी से थीं। दक्षिण की शुष्क पहाड़ियों से उत्तर के उपजाऊ क्षेत्रों की ओर बहुत सी चट्टानें थीं। यह थोड़ी सी हैरानी की बात होती है कि इस्राएल के लोगों ने प्राकृतिक संसाधन को प्रयोग करने के कई तरीके खोज निकाले। उन्होंने पत्थरों को हथियार और भवन निर्माण सामग्री के लिए प्रयोग किया। हैरानी की बात नहीं उन्होंने पत्थर की कठोरता के अलंकार को अपने और परमेश्वर के बीच सम्बन्ध को प्रकट करने के लिए भी प्रयोग किया।

व्यवस्थाविवरण और भजन संहिता में, परमेश्वर ने स्वयं को कई बार चट्टान कहा। वह इस्राएल की चट्टान था, अटल, स्थिर, कभी न विफल होने वाली सामर्थ्य। मूसा ने गाया, "मैं तो यहोवा नाम का प्रचार करूंगा। तुम अपने परमेश्वर की महिमा को मानो! वह चट्टान है, उसका काम खरा है; और उसकी सारी गति न्याय की है। वह सच्चा ईश्वर है, उस में कुटिलता नहीं, वह धर्मी और

सीधा है" (व्यवस्थाविवरण 32:3, 4)।

देश की चट्टानों से लिए गए अलंकार नया नियम तक जारी रहते हैं। जब पतरस ने अंगीकार किया कि यीशु मसीह है, प्रभु ने कहा उसका अंगीकार चट्टान था, एक दृढ़ नींव जिस पर वह अपनी कलीसिया बनाएगा। "और मैं भी तुझ से कहता हूं, कि तू पतरस है; और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा: और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे" (मत्ती 16:18)। प्रेरित को प्रभु के अलंकार से प्रेरणा उस समय मिली होगी जब उसने मसीह के कार्य और मिशन को बताने के लिए चट्टान के अलंकार का प्रयोग किया।

1. *यीशु चट्टान है क्योंकि वही मसीहियों को जीवन कैसे व्यतीत करना चाहिए उसके लिए पक्का मार्गदर्शन और आदर्श है* (2:6)। उसने मार्ग दर्शाया है, अपने शिष्यों के लिए एक आदर्श प्रदान किया कि उन्हें परमेश्वर की सेवा कैसे करनी चाहिए। यीशु पत्थर से बढ़कर है; वह कोने का पत्थर है। अपनी बात को दर्शाने के लिए पतरस ने यशायाह 28:16 के शब्दों को प्रयोग किया: "इसलिये प्रभु यहोवा यों कहता है, 'देखो, मैं ने सिय्योन में नींव का पत्थर रखा है, एक परखा हुआ पत्थर, कोने का अनमोल और अति दृढ़ नींव के योग्य पत्थर: और जो कोई विश्वास रखे वह उतावली न करेगा।'"

उन दिनों में इस्राएल में अधिक पेड़ नहीं थे और अभी भी नहीं हैं। लकड़ी असाधारण और महंगी भवन-निर्माण सामग्री थी। लकड़ी पर कार्य करने की बजाय, इस्राएल के कारीगर पत्थरों से मकान बनाने में दक्ष हो गए। वे पत्थरों को इतनी बारीकी से आकार देते थे कि चूना लगाने की जरूरत नहीं पड़ती थी। जब कि आमतौर पर ऐसा सोचा जाता है कि यीशु पेशे से एक बढ़ई था, अब कई विश्वास करते हैं यूनानी शब्द τέκτων *(टेकटोन)* का बेहतर अनुवाद "पत्थर से मकान बनाने वाला" है। आज यरूशलेम में, यदि कोई भवन बनाना चाहता है तो उसे नियम के अनुसार पत्थर से ही भवन निर्माण करना है। यरूशलेम नगर पत्थर से बना हुआ है। वैसे ही जैसे यह प्राचीन युग में था।

उस समय में जब पतरस था, संसार भर से यहूदी विशाल मन्दिर के विषय जानते थे जो महान हेरोदेस ने यरूशलेम में बनवाया था। यहाँ तक गैर यहूदी भी इसकी भव्यता और सुन्दरता का प्रशंसा करते थे। हेरोदेस ने पहाड़ की प्राकृतिक रूपरेखा को बढ़ाया था जहाँ सुलैमान के द्वारा मन्दिर बनवाया गया था। उसके कारीगरों ने दीवार को पक्का बनाने के लिए बड़े-बड़े पत्थरों का प्रयोग किया। हेरोदेस के कारीगरों ने न केवल मन्दिर को बनाना ही सम्भव किया परन्तु शानदार बरामदों के द्वारा घिरे क्षेत्र में बड़ा आंगन भी बनाया। यह सब कुछ पत्थर का ही बना हुआ था। पुरातत्व वादियों ने उन में से कइयों को खोजा है। हेरोदेस ने पत्थरों के किनारों पर कटाव के साथ विशेष चिन्ह लगाए थे। पुरातत्व वादियों को इन्हें पहचानने में कोई कठिनाई नहीं हुई।

आज यरूशलेम में जाने वाला व्यक्ति हेरोदेस की मजबूत दीवार के कोने के पत्थर के विषय सोच सकता है वह पढ़ता या पढ़ती है कि परमेश्वर ने सिय्योन में व्यक्ति प्रभु यीशु मसीह में कोने का पत्थर धरा। हेरोदेस के पत्थर का आकार 20

फुट लम्बा, 5 फुट ऊँचा और 5 फुट चौड़ा हो सकता है जिसे बड़ी बारीकी से काटा और आकार दिया। भवन इसी पर टिका हुआ है। इस तरह का पत्थर, यीशु दृढ़ नींव है जिस पर मसीही जीवन शैली टिकती है।

उन पदों में जिनमें पतरस ने यशायाह 28:16 का उल्लेख किया, उसने पत्थर के अलंकार को बताया। पतरस ने कहा कि क्योंकि मसीह पत्थर है, इस भाव में प्रत्येक मसीही उसकी दृढ़ता में भाग लेता है। अपने प्रभु के साथ, मसीही मिलकर ऐसे घर को बनाते हैं जहाँ परमेश्वर निवास करता है। इस घर में प्रत्येक विश्वासी जीवित पत्थर है। पतरस ने लिखा,

> उसके पास आकर, जिसे मनुष्यों ने तो निकम्मा ठहराया परन्तु परमेश्वर के निकट चुना हुआ और बहुमूल्य जीवित पत्थर है, तुम भी आप जीवते पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हैं (1 पतरस 2:4, 5)।

मसीही लोग भी चट्टानें हैं। अमेरिकी समाज की नींवें ढहती हुई दिखाई देती हैं। परन्तु, यह बात उनके लिए नहीं हैं जो मसीह को कोने के पत्थर के रूप में देखते हैं। मसीही पति अपनी पत्नी का आदर करते हैं। पत्नियाँ अपने पति का आदर करती हैं। प्रभु के ज्ञान और शिक्षा में वे दोनों ही वास्तविक संतान हैं। वे अपने पड़ोसियों के साथ अच्छा व्यवहार करते हैं। उनके वचन चट्टान के समान दृढ़ होते हैं। मधुरता उनकी पहचान है। उनकी जीवन शैली उनको अटल बनाती है। पतरस के वचन सुझाते हैं कि यीशु दृढ़ चट्टान है, एक सुरक्षित नींव जिस पर मसीही विश्वास, आशा और आत्मविश्वास टिकता है। भूकम्प भवन को हिला सकते हैं परन्तु अधोलोक के फाटक उस नींव को नहीं हिला सकते जिस पर मसीही अपने जीवनों को बनाते हैं और अपनी आशा रखते हैं।

युग बीत जाते हैं, शासन आते हैं और जाते हैं, पर्वत उठते हैं और समुद्र जा मिलते हैं, परन्तु मसीह चट्टान, इस्राएल के परमेश्वर की तरह, हमेशा के लिए स्थिर रहता है।

> आदि में तू ने पृथ्वी की नींव डाली, और आकाश तेरे हाथों का बनाया हुआ है। वह तो नाश होगा, परन्तु तू बना रहेगा; और वह सब कपड़े के समान पुराना हो जाएगा। तू उसको वस्त्र की नाई बदलेगा; और वह तो बदल जाएगा; परन्तु तू वहीं है, और तेरे वर्षों का अन्त नहीं होने का। (भजन संहिता 102:25-27)।

2. *यीशु नींव का पत्थर है, परन्तु वह व्यर्थ ठहराया हुआ पत्थर भी है* (2:7)। पतरस यीशु के कोने के पत्थर के रूप से परमेश्वर के भवन के नींव के पत्थर की ओर मुड़ता है, एक अन्य अलंकार के लिए। इस समय वह भजन संहिता 118:22 की ओर ध्यान करता है : "राज मिस्त्रियों ने जिस पत्थर को निकम्मा ठहराया था वही कोने का सिरा हो गया है।" यीशु स्वयं इसी भजन का उल्लेख किया था जब उसने यहूदियों का सामना किया था और उन्होंने उसे व्यर्थ

ठहरा दिया था। यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुम ने कभी पवित्र शास्त्र में यह नहीं पढ़ा, कि जिस पत्थर को राज मिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने के सिरे का पत्थर हो गया?" (मत्ती 21:42)।

जब यीशु ने भजन संहिता 118 का उल्लेख किया, तब वह यहूदी राष्ट्र के अगुओं से बातचीत कर रहा था। परमेश्वर के वचन के विद्यार्थी के होने के नाते, उनको अन्य लोगों से बढ़कर परमेश्वर के मसीह को पहचान लेना चाहिए था। इसके बजाय उन्होंने उसे व्यर्थ ठहराया, उसका उपहास किया और वे उसे क्रूस पर चढ़ाने के माध्यम थे। यीशु निकम्मा ठहराया हुआ पत्थर था। जब पतरस ने इस बाइबल अंश का उल्लेख किया वह यहूदियों के विषय नहीं बात कर रहा था। ऐसा दिखाई देता है कि प्रेरित भजन संहिता के अनुप्रयोग सीमा-रेखा बना रहा है। यहूदियों ने यीशु को व्यर्थ ठहराया, परन्तु उससे बढ़कर, संसार के सभी लोगों में से बुद्धिमान और महान लोगों ने उसे व्यर्थ ठहराया।

यीशु निकम्मा ठहराया हुआ पत्थर है और यही महान विरोधाभास है। परमेश्वर ने उन सब बातों को ले लिया है जिनको मनुष्य सम्मानित और महान समझते थे और उनको उल्टा-पुल्टा कर दिया है। उसने संसार की छोटी, महत्वहीन वस्तुओं को अपने हाथों में लिया है, छोटी वस्तुएं महान बन गई हैं। यीशु गलील का एक शिल्पकार था, लम्बे और खुरदरे हाथों वाले इस मनुष्य का गाँव में जन्म हुआ। वह ऐसा कुछ भी नहीं था कि संसार उसे देखता। इसमें कोई संदेह नहीं राज मिस्त्रियों ने उसे निकम्मा ठहराया। सांसारिक मानक के अनुसार वह इतना उपयोगी पत्थर नहीं था। कोने का पत्थर होने के लिए संसार ने उसे अनुचित समझा।

यह परमेश्वर ही था जिसने यीशु को भवन का कोने का पत्थर बनाया। मनुष्यों ने उसे निकम्मा ठहराया और उसे निकम्मा ठहरा ही रहे हैं। परमेश्वर ने संसार की तुच्छ और दीन हीन वस्तुओं को लिया। उसने विनम्र गलीली कारीगर को कलीसिया का कोने का पत्थर बना दिया। प्रेरित पतरस और पौलुस लोग थे। एक अन्य संदर्भ में, यह देखना कितना ही रुचिकर है कि किस तरह से पौलुस ने उचित रूप से विरोधाभास में प्रकट किया कि परमेश्वर निर्बल और दीन-हीन लोगों के द्वारा कार्य करता है। होने दें संसार के पास अपने राजा हों, अपना प्रभाव हो, अपनी विलासिता हो। पौलुस दीन-हीन लोगों के साथ बैठेगा और उनके साथ, परमेश्वर के साथ अपनी सहायता के रूप में, वह संसार पर विजय पाएगा। "क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूँ तभी बलवन्त होता हूँ" उसने कहा (2 कुरिन्थियों 12:10)। प्रेरित ने आगे कहा, "वह निर्बलता के कारण क्रूस पर चढ़ाया तो गया तौभी परमेश्वर की सामर्थ्य से जीवित है, हम भी तो उस में निर्बल हैं, परन्तु परमेश्वर की सामर्थ्य से जो तुम्हारे लिये है, उसके साथ जीएंगे" (2 कुरिन्थियों 13:4)।

3. *यीशु ठेस लगने का पत्थर और ठोकर खाने की चट्टान है* (2:8)। पतरस ने यशायाह 28:16 का उल्लेख किया और यीशु को कोने का सिरा पाया। उसने भजन संहिता 118:22 का उल्लेख किया और उसे निकम्मा ठहराया हुआ पत्थर

पाया। इस समय, प्रेरित यशायाह की ओर मुड़ा। "और वह शरण स्थान होगा, परन्तु इस्राएल के दोनों घरानों के लिये ठोकर का पत्थर और ठेस की चट्टान और यरूशलेम के निवासियों के लिये फंदा और जाल होगा" (यशायाह 8:14)।पौलुस ने इसी से मिलते जुलते कथन को प्रकट किया : "परन्तु हम तो उस क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह का प्रचार करते हैं जो यहूदियों के निकट ठोकर का कारण, और अन्यजातियों के निकट मूर्खता है" (1 कुरिन्थियों 1:23)। पौलुस के लिए ठोकर का कारण विशेष रूप से क्रूस था। एक अन्य स्थान पर उसने पूछा, "परन्तु हे भाइयो, यदि मैं अब तक खतना का प्रचार करता हूं, तो क्यों अब तक सताया जाता हूं, फिर तो क्रूस की ठोकर जाती रही" (गलातियों 5:11)।

रोमी लोग सामर्थ्य का आदर करते थे। जब मिथ्या और सांसारिक बुद्धिमान रोमियों ने पहली बार मसीहियत के विषय सुना, उन्होंने सोचा यह तो बहुत बढ़िया मज़ाक है। मसीहियों के इस उद्धारकर्ता को रोमी लोगों ने तो क्रूस चढ़ाया था। ऐसे व्यक्ति की आराधना करना कितना हास्यास्पद है। यहूदियों के लिए, अन्य कारणों से यीशु ठोकर खाने का पत्थर था। मूसा की व्यवस्था में एक अंश था जिसने प्रत्येक दृष्टिकोण को प्रकट किया कि यीशु, मसीह था। "क्योंकि जो लटकाया गया हो वह परमेश्वर की ओर से शापित ठहरता है," मूसा ने कहा (व्यवस्थाविवरण 21:23; देखें गलातियों 3:13)। यहूदी और अन्यजाति दोनों ही जातियों ने ठोकर खाई कि यीशु कोई विशेष व्यक्ति था। उनके लिए यह सोचना मूर्खता की बात थी कि क्रूस पर चढ़ाया हुआ व्यक्ति परमेश्वर का पुत्र हो सकता है।

जब पतरस ने यीशु के विषय ठेस लगने का पत्थर कहा उसने महत्व को बदल दिया। संसार के लोगों ने यीशु की शिक्षाओं से ठेस खाई क्योंकि उन्होंने पाप को प्रिय जाना। उन्होंने ठोकर खाई क्योंकि वे परमेश्वर का भाग नहीं बनना चाहते थे। वे अपनी ही इच्छाओं पर चलना चाहते थे। "ठेस लगने का पत्थर और ठोकर खाने की चट्टान हो गया है क्योंकि वे तो वचन को न मानकर ठोकर खाते हैं ..." (1 पतरस 2:8)। संसार के लोगों के लिए क्रूस लगातार ठेस लगने का पत्थर रहा है। जैसा रोमी शासन में था, मसीह का क्रूस उन लोगों को लिए अनुकूल नहीं होगा जो धन, यश और पदवी के पीछे हैं। वे चाहे इस बात को कहें या न कहें, बहुत संख्या में लोगों के जीवन क्रूस की ठेस लगने के पत्थर के रूप में घोषणा करते हैं।

आज भी कुछ लोग यहूदियों की तरह ही हैं। वे परमेश्वर के पुत्र को विनम्र, बढ़ई कारीगर और शिक्षक के रूप में नहीं देख सकते। परमेश्वर का पुत्र क्रूस पर मरे वे इस बात की कल्पना नहीं कर सकते। अन्य लोग अन्यजाति के समान हैं। वे मसीह के क्रूस से ठोकर खाते हैं क्योंकि यह उनको अपने जीवन बदलने के लिए, परमेश्वर की आराधना करने के लिए, परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए, मसीह समाज अर्थात यीशु मसीह की कलीसिया के भाग के रूप में उसकी सेवा करने के लिए बुलाता है। कुछ लोग इसलिए ठोकर खाते हैं क्योंकि वे परमेश्वर के प्रति अवज्ञाकारी हैं।

सारांश. नया नियम पर ध्यान करते हुए, पतरस ने यीशु के प्रति हमारी समझ और उसके साथ हमारे सम्बन्धों को दृढ़ करने के लिए अपने समय के पत्थरों का प्रयोग किया। (1) यीशु चट्टान है क्योंकि वह योग्य है और भलाई और धार्मिकता का अटल आदर्श है। (2) यीशु निकम्मा ठहराया हुआ पत्थर है। (3) यीशु ठेस लगने का पत्थर और ठोकर खाने की चट्टान है।

समाप्ति नोट्स

[1]जे. एन. डी. केल्ली, *ए कमैंट्री ऑन दि इपिस्टलस ऑफ पीटर एण्ड ज्यूड,* ब्लैकस न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (लंडनः एडम एण्ड चार्ल्स ब्लैक, 1969), 84. [2]वाल्टर बाउर समकालीन साहित्य का हवाला दिया और तर्क दिया कि 1 पतरस 2:2 में "आत्मिक" अनुवाद ही सही है। (वाल्टर बाउर, *तीसरा संस्करण., रिवा. एण्ड इडी. फ्रैडरिक विलियम डेंकर* [शिकागोः यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रैस, *ए ग्रीक-इंगलिश लैक्सिकोन ऑफ दि न्यू टैस्टामेंट एण्ड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 200], 598.) परन्तु बाउर के द्वारा प्रस्तुत किए गए हवाले में भी शब्द का अर्थ ज़रा से कारण या तर्क से पूरी तरह "आत्मिक" पृथकीकरण नहीं है। यूनानी शब्द विचारशीलता तर्कसंगत के भाव को नहीं छोड़ता है क्योंकि अनुवादकों ने आत्मिक शब्द देने का निर्णय किया। [3]दूसरी शताब्दी के आरम्भ के इतिहासकार सुइटोनियस शब्दों से परेशान हो गया था जब उसने कलॉडियस सीज़र के दिनों में रोमियों के यहूदियों पर सताव के विषय लिखा। सुइटोनियस ने लिखा कि कष्ट किसी *क्रेस्टुस* (लतीनी), जो यूनानी Χριστός *(क्रिस्टोस)* के समरूप था, के द्वारा उकसाया गया था। ऐसी सम्भावना है कि यहूदी समाज में समस्या तब खड़ी हुई जब मसीह के संदेश की शुरुआत हुई थी। ऐसा आभास होता है कि सुइटोनियस नामों से परेशान था भले ही यह निश्चित नहीं था। देखें सुइटोनियस *दि लाइवस ऑफ दि सीज़र : कलॉडियस* 25.4. [4]जबकि पतरस के नाम (Πέτρος, *पेटरोस)* का अर्थ "पत्थर" है, पर 2:8 के पेटरा को छोड़कर पूरे पदों में λίθος *(लिथोस)* पत्थर प्रयोग किया है। यह अविश्वसनीय है कि पतरस जब लिख रहा था, तो वह अपने ही नाम के अर्थ को प्रकट कर रहा था। [5]*थियोलोजिकल इन डिक्शनरी ऑफ दि न्यू टेस्टामेंट,* इडी. गेरहारड किट्टेल, ट्रांस. एण्ड इडी. जेफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रेपिडस, मिशिगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1964), 1:792 में जोआकीम जेरेमियास, "ἀκρογωνιαῖος" [6]1 और 2 इतिहास, एज्रा, नहेम्याह और कुछ नबियों की पुस्तक में कई बार शब्द "घर" मन्दिर का उल्लेख करता है। भजन संहिता में इसका प्रयोग घर या वाचा के सन्दूक के रूप में उल्लेख किया, यह प्रत्येक भजन के समय पर निर्भर करता है। [7]अर्नस्ट बेस्ट, *1 पीटर,* दि न्यू टेस्टामैंट बाइबल कमैंट्री (ग्रैंड रेपिडस, मिशी.: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1971), 105. [8]फ्रांसिस राइट बिअर, *दि फर्स्ट एपिसल ऑफ पीटरः दि ग्रीक टैक्सट विद इंटरोडक्शन एण्ड नोट्स,* तीसरा संस्करण. (ऑक्सफोर्डः बासिल ब्लैकवैल, 1970), 124. [9]2 एसड्रास 5:23-27 (REB)। [10]देखें एडवर्ड गॉरडन सेल्विन, *दि फर्स्ट इपिस्टिल ऑफ सेंट पीटरः दि ग्रीक टैक्स्ट, विद इंटरोडक्शन, नोटस एण्ड एस्से,* थॉनएप्पल कमैंट्रीज, दूसरा संस्करण (लंदनः मैकमिल्लन एण्ड कम्पनी, 1947; पुनःमुद्रण, ग्रैंड रेपिडस, मिशी, बेकर बुक हाऊस, 1981), 166.